14
औद्योगीकरण की अवधारणा
(CONCEPT OF INDUSTRIALIZATION)

विश्व के अधिकांश देशों का निर्धनता का कारण वहाँ के आर्थिक साधनों का उचित एवं पूर्णतः उपयोग न करना है। इसीलिए नेहरू जी ने कहा था–"औद्योगीकरण पर ही वास्तविक उन्नति निर्भर करती है।"[1]

औद्योगीकरण वह मार्ग है जिस पर चलकर कोई भी देश अपने आर्थिक, तकनीकी एवं प्राकृतिक साधनों का अधिकतम प्रयोग करने में सफल हो सकता है। औद्योगीकरण के द्वारा आर्थिक साधनों का उपयोग करके एक तरफ जन-जीवन के स्तर को उठाया जा सकता है, तो दूसरी तरफ अर्थव्यवस्था के अनेक दोषों को भी दूर किया जा सकता है। औद्योगीकरण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाता है। इसीलिए विश्व के समस्त देश औद्योगीकरण की दिशा में प्रयत्नशील हैं। औद्योगीकरण जहाँ एक ओर आर्थिक व्यवस्था में गंभीर परिवर्तन लाता है वहाँ समाज तथा जन-जीवन के अनेक अंगों को भी प्रभावित करता है। इससे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रतिमानों में परिवर्तन उत्पन्न होते हैं।

औद्योगिक क्रान्ति
(INDUSTRIAL REVOLUTION)

16वीं और 18वीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति का आरम्भ हुआ। औद्योगिक क्रान्ति की प्रक्रिया केवल एक स्थान पर ही नहीं हुई, वरन् इस क्रान्ति का अन्य देशों में भी सामान्यतः एक जैसा ही प्रसार हुआ। औद्योगिक क्रान्ति मूलतः इंग्लैण्ड की देन है। इस क्रान्ति के द्वारा यांत्रिक आविष्कार हुए। इसने कम समय में अधिक उत्पादन क्षमता को उत्पन्न किया। इसके साथ ही एक मशीन अनेक श्रमिकों का कार्य करने लगी, जिससे श्रम की बचत हुई। 1784 में कार्टराईट नामक व्यक्ति ने एक प्रकार की मशीन बनाई जो पानी से चलती थी, जिस पर एक पन्द्रह वर्ष का लड़का बैठकर दस व्यक्तियों के कार्य के बराबर कार्य कर सकता था। 1750 में पत्थर के कोयले का पता लगा। इसने मशीनों की क्षमता को और भी आगे बढ़ा दिया। 1765 में जेम्स वाट ने स्टीम इंजन बनाकर इस क्रांति को शक्ति एवं तीव्रता प्रदान की। इस प्रकार एक के बाद एक यांत्रिक आविष्कार होते गए और जिन्होंने औद्योगिक क्षेत्र में एक नये युग का निर्माण करने में सहायता की।

---

1. *Speeches*, March 1948, Aug. 1951 p. 11

Scanned with CamScanner

भारत में औद्योगिक क्रान्ति नहीं के बराबर हुई है। इसका बहुत बड़ा कारण है कि दूसरे देश की सरकार (अंग्रेजी सरकार) भारत में औद्योगिक क्रान्ति क्यों लाती ? क्योंकि इससे न उसका हित था और न स्वार्थ ही। यही कारण है कि भारतीय श्रमिक जो खेती से चिपटा हुआ था, वह अन्य प्रगतिशील देशों की तुलना में पीछे रह गया।

भारत में संगठित उद्योगों का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। फैक्टरी उद्योग 1853 में एक सूती मिल के द्वारा मुम्बई प्रान्त में प्रारम्भ हुआ। प्रथम महायुद्ध तक भारत में केवल सूती-वस्त्र, जूट और कोयले के उत्पादन में ही प्रगति हो पायी थी, अन्य उद्योगों की उन्नति नाम मात्र को ही हुई थी। 1921 में जमशेदपुर में टाटा स्टील वर्क्स की स्थापना से यह आशा बन्ध गयी थी कि देश में लोहा और इस्पात के उत्पादनों में प्रगति हो जाएगी। इस धीमी प्रगति का कारण उस समय की राजनीति थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का मुख्य उद्देश्य था कि भारत में अपने व्यापार का ही प्रसार किया जाये जिससे कच्चे माल का निर्यात बढ़ सके और तैयार ब्रिटिश माल की खपत भारत में हो सके।

1905 के बंगभंग और स्वदेशी आन्दोलन से भारतीय उद्योगों को कुछ प्रोत्साहन मिला और उपाभोक्ताओं में स्वेदशी वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी। 1916 में उद्योग कमीशन की नियुक्ति हुई, जिसने युद्धास्त्रों में काम आने वाले लोहे, इस्पात एवं रसायनों का उत्पादन करने वाले उद्योगों को उत्पादन के लिए उत्साहित किया गया। उधर प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध के बीच औद्योगीकरण प्रगति डावांडौल होती रही। मंदी के समय में उसे काफी क्षति भी उठानी पड़ती थी। युद्ध समाप्ति के पश्चात् जो विरासत देश को मिली वह दुःखदायी और भयंकर थी। वस्तुओं की कीमतें बढ़ीं, मशीनों और कलपुर्जों के आयात में कठिनाई हुई, मजदूरों की व्यापक छंटनी हुई, राजनीतिक और साम्प्रदायिक क्रान्तियों में वृद्धि हुई। इससे पूरे देश में अशान्ति फैल गई, जिससे औद्योगिक विकास को एक और धक्का लगा और साथ ही इसमें अनेक गड़बड़ियाँ भी उत्पन्न हो गई।

लेकिन स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा एक छोटे पैमाने पर औद्योगिक क्रान्ति लाने का प्रयत्न किया है। आज भारत स्वयं बहुत से यन्त्रों को बनाने में लगा है। कुछ वर्ष पूर्व छोटे से छोटे मशीन का पुर्जा भी बाहर से भारत में आता था, किन्तु आज भारत औद्योगीकरण के क्षेत्र में काफी तीव्रता से आगे बढ़ रहा है। आज हम यह कह सकते हैं कि भारत बड़ी से बड़ी मशीनों का निर्माण ही नहीं कर रहा है, बल्कि विदेशों में उन्हें भेज भी रहा है।

औद्योगीकरण की परिभाषा
(Definition of Industrialization)

अनेक विद्वानों ने औद्योगीकरण को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। कुछ महत्त्वपूर्ण परिभाषायें निम्नलिखित हैं–

पी-कांग-चांग (Pei-kang-chang) के अनुसार **"औद्योगीकरण से अर्थ उस प्रक्रिया से है, जिसके अन्तर्गत उत्पादन कार्यों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होते रहते हैं । इनमें वे आधारभूत परिवर्तन भी हैं, जिनका सम्बन्ध किसी औद्योगिक उपक्रम के यंत्रीकरण, नवीन उद्योगों के निर्माण, नये बाजार की स्थापना तथा किसी नवीन क्षेत्र के विदोहन से हो। यह एक तरह के पूँजी को गहन** (deepening) **और व्यापक** (widening) **बना देने की विधि है।**

पी० टी० बौर (P.T. Bauer) और बी० एस० एमे (B.S. Yamey) के अनुसार, **"औद्योगीकरण व्यापक रूप से आर्थिक विकास और रहन-सहन के स्तर में सुधार की कुंजी माना जाता**

Scanned with CamScanner

है। निर्माण उद्योग के रूप में, प्राचीन विचारकों के अनुसार औद्योगीकरण को आर्थिक विषमता व निर्धनता के समाधान के लिए संजीवनी माना गया है। वस्तुतः निर्माण उद्योग केवल एक प्रकार की आर्थिक क्रिया है।"

पुनः कार्टलिज के शब्दों में-"निर्माण उद्योग एक अर्थ में उत्पादन के उच्चतर स्तर का प्रतिनिधित्व करते हैं। विकसित देशों में निर्माण उद्योगों का विकास वास्तविक आर्थिक विकास और रहन-सहन का स्तर के प्रतीक है। अल्पविकसित देशों में भी उद्योग में श्रमशक्ति की उत्पादकता परम्परागत कृषि-कार्यों से पर्याप्त अधिक है। औद्योगीकरण और उद्योग में संलग्न व्यक्तियों की उन्नति प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय-आय में वृद्धि करने का एक साधन है।"

वास्तव में संकुचित अर्थ में 'औद्योगीकरण' का तात्पर्य है-निर्माण-उद्योगों को अधिक से अधिक स्थापित किया जाय, जिससे एक तरफ उत्पादन के साधनों की क्षमता में वृद्धि हो सके तथा उनका अधिकतम् उपयोग किया जा सके और दूसरी तरफ जनजीवन स्तर को भी उठाया जा सके। व्यापक अर्थ में 'औद्योगीकरण' से अर्थ यंत्रों तथा नवीनतम तकनीकी ज्ञान एवं प्रयोग, शक्ति में वृद्धि, वैज्ञानिक औद्योगीकरण संगठन, विधि के उपयोग और बड़े पैमाने पर पूँजी के विनियोग से है, इसमें अन्ततः श्रम-विभाजन, अर्थ-व्यवस्था का वितरण और विनिमय प्रणाली भी आ जाती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि औद्योगीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आधुनिकतम तकनीकी ज्ञान का प्रयोग किया जाता है जिसका उद्देश्य है नवीन उद्योग की स्थापना करना, श्रम और विभिन्न प्रकार के उत्पादन के साधनों का प्रयोग और आर्थिक साधनों में सुधार करना जिससे जन-जीवन का स्तर ऊपर उठ सके।

औद्योगीकरण की आधुनिक प्रवृत्तियाँ
(Modern trends in Industrialization)

आधुनिक युग में औद्योगीकरण पर अधिक से अधिक बल दिया जा रहा है। प्रत्येक देश अपने देश में औद्योगीकरण में प्रगति लाना चाहता है। इसलिए उसके सम्मुख औद्योगीकरण एक विकल्प मात्र है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में प्रगति होने के कारण औद्योगीकरण को केवल प्रोत्साहन ही नहीं प्राप्त हुआ, वरन् इस क्षेत्र में नवीन प्रवृत्तियों को भी देखा जा सकता है। ये निम्नलिखित हैं-

1. तकनीकी प्रगति-तकनीकी दृष्टि से प्रत्येक क्षेत्र-बड़ा देश निरन्तर प्रगति कर रहा है। तकनीकी प्रगति ने औद्योगिक क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न करने का श्रेय प्राप्त किया है। नये प्रकार से उत्पादन के कार्य होने लगे हैं। नवीन मशीनों और अणु-शक्ति ने उद्योगों और उत्पादन के ढंगों को जन्म देकर औद्योगीकरण को गति और शक्ति प्रदान की है।

2. नियोजित औद्योगीकरण-आरम्भ में जो औद्योगिक क्रांति हुई, वह नियोजित ढंग से नहीं की गई थी किन्तु आज प्रत्येक देश सुनिश्चित योजना बना कर और उद्देश्य को ध्यान में रखकर औद्योगीकरण को अपने देश में स्थापित कर रहे हैं।

3. औद्योगीकरण के क्षेत्र में एकाधिकार का अन्त-19वीं शताब्दी में जर्मनी, अमेरिका, जापान आदि के महत्त्व में भी वृद्धि हुई, किन्तु आज प्रत्येक देश औद्योगीकरण के लिए प्रयत्नशील है। इसने उन देशों के एकाधिकार को समाप्त कर दिया, जिनका औद्योगीकरण के क्षेत्र में प्रभाव था।

4. उत्पादकता आन्दोलन-कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन करने के लिए उत्पादकता आन्दोलन को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और इसकी गति में आशातीत वृद्धि हुई।

5. सरकारी सहयोग-सरकार की विभिन्न योजनाएँ औद्योगीकरण को केवल प्रोत्साहन ही

Scanned with CamScanner

नहीं दे रही है, वरन् उन्हें आर्थिक सहायता देकर बड़े उद्योगों की स्थापना कर रही है और दूसरी तरफ सरकार स्वयं भी औद्योगीकरण के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के द्वारा औद्योगीकरण को प्रोत्साहित कर रही है।

औद्योगीकरण और नगरीकरण के प्रभाव
(EFFECTS OF INDUSTRIALIZATION AND URBANIZATION)

एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हमारे सामने यह है कि क्या औद्योगीकरण और नगरीकरण का प्रभाव समाज या व्यक्ति पर समान रूप से पड़ता है या उसके भिन्न रूप हैं।

औद्योगीकरण और नगरीकरण दोनों ही प्रक्रियायें हमारे समाज में पृथक्-पृथक् रूप से घटित होती हैं। इसका अर्थ है कि इनका प्रभाव भी समाज एवं व्यक्ति पर पृथक् रूप में पड़ेगा। यह आवश्यक नहीं है कि नगरों की उत्पत्ति वहीं हुई है, जहाँ उद्योगों का विकास हुआ है अथवा उद्योगों की प्रगति वहीं हुई है, जहाँ नगर होते हैं। बहुत से नगरों के विकास और उन्नति को बढ़ाने केवल उद्योग ही नहीं, कुछ अन्य विशेषताएँ भी हैं, जिनसे नगर बने हैं। ये विशेषताएँ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक आदि हो सकती हैं, जिनके महत्त्व के कारण कोई नगर बन जाता है। जैसे वाराणसी, इलाहाबाद धार्मिक नगरों में गिने जाते हैं जबकि कानपुर, कलकत्ता औद्योगिक नगर कहे जाते हैं। अगर इन दोनों स्थानों के व्यक्ति का अध्ययन किया जाय तो उससे यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि दोनों नगरों के व्यक्तियों का नगरीकरण अलग-अलग रूप से हुआ है। उनके विचार, आचार, खान-पान आदि में बहुत अन्तर है। इस तरह हम कह सकते हैं कि औद्योगीकरण और नगरीकरण का प्रभाव पृथक्-पृथक् रूप से व्यक्तियों पर पड़ता है।

जेराल्ड ब्रीस का कहना है कि "औद्योगीकरण और नगरीकरण सामान्य अर्थों में एक दूसरे के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किए जाते हैं। संसार के किसी भाग में औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रगति एक साथ हो सकती है। किसी दूसरे स्थान पर औद्योगीकरण बिल्कुल नया भी हो सकता है।"[2] ब्रीस का यह कथन भारत पर भी लागू होता है। हमारे यहाँ नगरीकरण की प्रक्रिया औद्योगीकरण की प्रक्रिया से पहले ही प्रारम्भ हो गयी थी।

इसके होते हुए भी हम इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकते हैं कि औद्योगीकरण और नगरीकरण आज के समाज में इतने ज्यादा मिल गए हैं कि इसके प्रभाव भी प्रायः मिश्रित रूप से समाज पर पड़ते हैं। उदाहरण के तौर पर एक ब्राह्मण जिसका नगरीकरण वाराणसी जैसे धार्मिक नगर में हुआ है, वह पूजापाठ करता है, लेकिन वह होटल में प्लेट और प्याले में खाना खाता है और एक कपड़े की दुकान में काम करता है। यहाँ पर दोनों ही प्रकार की विशेषतायें देखने को मिलती हैं। नगर के प्रभाव से व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्तियों का है, लेकिन औद्योगीकरण के प्रभाव से वह दूसरे स्थानों पर स्वतंत्र हो जाता है।

प्रगतिशील नगर इस बात का भी निश्चय करते हैं कि भविष्य में उनका नगर किस प्रकार का हो। विभिन्न प्रकार की योजनाओं के द्वारा अलग-अलग नगरों में विभिन्न प्रकार के उद्योगों को स्थापित किया जाता है, जिससे प्रभावित होकर नगरीकरण भी भिन्न-भिन्न होता है। इस प्रकार प्रत्येक बसते और उभरते हुए नगरों का वातावरण बहुत कुछ समान होते हुए भी भिन्न बन जाता है जिसका

2. Gerald Breese, *Urbanization in Newly Developed Countries*, p. 5.

Scanned with CamScanner

प्रभाव नगरवासियों पर पड़े बिना नहीं रहता है। जैसे मुम्बई और दिल्ली नगरनिवासियों में जितना फैशन का उभरापन देखने को मिलेगा, शायद उन भारतीय नगरों में नहीं। लेकिन हम यह भी नहीं कह सकते कि औद्योगीकरण नगर की वृद्धि और आर्थिक स्तर को निर्धारित नहीं करता है। जिन नगरों में उद्योगों का विकास हो रहा है उनका क्षेत्र स्वतः बढ़ता जा रहा है साथ ही अन्य नगरों की तुलना में उनका आर्थिक स्तर भी सुदृढ़ होता जा रहा है। बीस महोदय औद्योगीकरण के महत्त्व को बताते हुए कहते हैं कि **"औद्योगीकरण महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है, न केवल किसी विशेष नगर के विशेष क्षेत्र के वृद्धि के रूप में भी। इनके साथ ही सानुपातिक आर्थिक प्रगति भी नगरीकरण में सम्मिलित है।"**

नगर एक ऐसा स्थान है जहाँ औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के फलस्वरूप व्यक्ति में विभिन्न प्रक्रियाएँ उत्पन्न होती हैं। नगरीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप व्यक्ति के कार्य करने का ढंग एक निश्चित प्रकार के ढाँचे में ढलता जाता है। उदाहरण के लिए नगर की जिन्दगी में औपचारिकता का बढ़ना। जैसे किसी के यहाँ आइये आपको तुरन्त ही चाय का प्याला पेश करेंगे और बच्चे टाटा करते हुए आपको विदाई देंगे। इस प्रकार के अनेक उदाहरण नगर के सामान्य व्यवहार में सम्मिलित होते जा रहे हैं। निर्धन एवं धनी सभी के यहाँ बच्चे माता-पिता को मम्मी-पापा कहते हैं। ये तथ्य नगर के प्रभाव को स्पष्ट बताते हैं।

औद्योगीकरण व नगरीकरण के सामाजिक प्रभाव (Socio-Economic effect of Industrialization)

भारत में उद्योगों का विकास यूरोप की अपेक्षा बहुत बाद में हुआ है। इसका विकास न होने के कारण हम यह तर्क देना उचित नहीं समझते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसलिए भारत में औद्योगीकरण की आवश्यकता नहीं थी वरन् मुख्य कारण उस समय की राजनीति व सरकार थी, जिसने भारत में उद्योगों के विकास एवं प्रगति में रुचि नहीं ली इसलिए कि यह उनके हित में नहीं था। भारत में औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रगति स्पष्टतया स्वतन्त्रता के पश्चात अनुभव की जाने लगी है। इसकी उन्नति भी इसी बीच में हुई है। औद्योगीकरण और नगरीकरण के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित हैं:-

पारिवारिक जीवन पर प्रभाव (Effects on Family Life)

1. **केन्द्रीय परिवारों का जन्म**–जब तक कृषि व्यवसाय गाँव के व्यक्तियों की निम्नतम आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहा तब तक व्यक्ति अपनी भूमि से बंधा रहा। दैवी प्रकोप जैसे, पाला, बाढ़, सूखा आदि के कारण जब व्यक्ति भूखों मरने लगा तो वह परिवार से जुड़े हुए कारोबार को मजबूरी में छोड़कर नगर की शरण में आ गया। इस प्रकार व्यक्ति एक शहर में या अनेक शहरों में बिखर गये और परिवार टुकड़ों-टुकड़ों में बंटकर छोटा और सीमित हो गया। शर्मीडर के शब्दों में, **"उद्योगवाद व्यक्ति के कार्य क्षेत्र को पारिवारिक जीवन से पृथक कर देता है। ऐसा करके वह माता-पिता को बच्चों से, पति को पत्नी से पृथक करता है।"**

2. **कार्यक्षेत्र और मकान में दूरी**–पहले व्यक्ति अपने घर के निकट खेतों में कार्य किया करता था। अपने दरवाजे पर बैठकर विभिन्न प्रकार के कार्य करता था जैसे बढ़ई, लोहारी आदि। आज घर से दूर कोसों दूर काम करने के लिए जाना पड़ता है। मुम्बई जैसे शहर में तो 70-80 मील दूर तक व्यक्ति प्रतिदिन कार्य करने के लिए जाते हैं। इस प्रकार व्यक्ति काफी समय के लिए परिवार

Scanned with CamScanner

से बाहर रहता है। इसका प्रभाव परिवार पर अनेक प्रकार से पड़ता है।

3. **पारिवारिक नियन्त्रण का ह्रास**—नगरों में जहाँ स्त्री-पुरुष दोनों ही कार्य करते हैं, उस परिवार के बच्चे निरंकुश बन जाते हैं। परिवार में कोई बड़ा-बूढ़ा न होने के कारण पति-पत्नी पर भी कोई नियन्त्रण नहीं रह जाता है, जिसकी जब इच्छा होती है, तब घर आता है, जो मन होता है वह करता है।

4. **व्यक्तिवादी दर्शन और परिवार**—साधारणतया व्यक्तिवादी दर्शन का अर्थ है कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को केन्द्र में रखकर उसके अनुसार सारी बातें सोचता है जैसे, कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति को अच्छे और बुरे कार्यों में अपनी इच्छानुसार व्यय कर सकता है। उसे कोई रोकने वाला नहीं है। इस प्रकार व्यक्ति समूह के विचार से दिन-प्रतिदिन अलग होता जाता है। व्यक्तिवाद ने व्यक्ति को संयुक्त परिवार की भावना से अलग कर दिया है। वह अब स्वयं का मालिक है। व्यक्ति स्वयं अपने बनाये हुए घेरे में रहता है। उसकी इच्छाएँ, शक्तियाँ, दृष्टिकोण सब कुछ अपना है और उसी के अनुसार वह कार्य करता है। उसे यह भय नहीं है कि परिवार अथवा पास-पड़ोस के व्यक्ति क्या कहेंगे ? उसे जो अच्छा लगता है वह वही करता है।

5. **पारिवारिक कार्य और उद्योग**—उद्योग का प्रभाव पारिवारिक कार्यों पर भी पड़ा है। उद्योगवाद परोक्ष व प्रत्यक्ष दोनों ही तरीके से परिवार के अन्दर होने वाले कार्यों को प्रभावित ही नहीं वरन् निर्धारित भी करता है जैसे, पति-पत्नी बच्चे, युवक और वृद्ध सभी किसी न किसी न रूप में अपने कार्यों को उत्पादन व्यवस्था के अनुकूल बनाने का प्रयत्न करते हैं जैसे, एक निश्चित समय पर काम पर जाना, खाने की छुट्टी में ही भोजन करना आदि। इस तरह उद्योगों के नियम के अनुसार कार्यों को करने लगता है।

6. **स्त्रियों के कार्य-क्षेत्र में परिवर्तन**—स्त्रियों का कार्य क्षेत्र अब केवल परिवार तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि अपनी शिक्षा और ज्ञान का प्रयोग वह परिवार के बाहर उत्पादन के अन्य क्षेत्र में भी करती है। यही कारण है कि आज नगरों में बहुत सी स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार के कार्य में लगी हुई हैं। वह राजनीति के क्षेत्र में भी प्रवेश कर रही है। वह अपनी जीविका स्वयं अर्जित करने में लगी है। इस प्रकार स्त्रियों का कार्य-क्षेत्र दिन-प्रतिदिन विस्तृत होता जा रहा है। आज स्त्रियाँ समाज के सभी क्षेत्रों में कार्य करती हुई देखी जा सकती हैं। वे छोटे पदों से लेकर बड़े-बड़े पदों पर बहुत ही जिम्मेदारी से कार्य कर रही हैं।

7. **स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन**—स्त्रियों के कार्य क्षेत्र में विस्तार होने के परिणामस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आया है। आधुनिक स्त्री अपनी स्थिति की स्वयं निर्माता है। आज से कुछ वर्ष पूर्व स्त्री की स्थिति परिवार में बहुत निम्न श्रेणी की थी। स्त्री केवल सास, ससुर और पति की सेवा मात्र के लिए ही बनी थी। उसका दूसरा कार्य सन्तानोत्पत्ति था। आज उसने अपने परिश्रम, शिक्षा और ज्ञान के द्वारा परिवार से बाहर भी एक सामाजिक स्थिति को बनाया है। आज वह किसी संस्था की अध्यक्ष, मन्त्री, प्रधानमन्त्री आदि है। यह उसकी अर्जित स्थिति है।

8. **प्रेम-विवाह और अन्तर्जातीय विवाह**—औद्योगीकरण और नगरीकरण ने व्यक्तियों के स्वभाव और आदर्शों को बहुत कुछ बदल दिया है। यही कारण है कि आज नगरों में स्त्री-पुरुष साथ-साथ कार्य करते हैं। सहशिक्षा (Co-education) का भी प्रचलन दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार स्त्री और पुरुष दोनों को ही एक-दूसरे के सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त होता है। वह

Scanned with CamScanner

सम्पर्क धीरे-धीरे प्रेम और प्रेम-विवाह में बदल जाता है। प्रेम-विवाह के अन्तर्गत जाति का बन्धन स्वतः टूट जाता है। वह किसी भी जाति के हो सकते हैं। उनका उद्देश्य केवल विवाह करना होता है। इस प्रकार अन्तर्जातीय विवाह का प्रचलन बढ़ने लगा बल्कि संभ्रान्त परिवार के लोग तो अखबारों में विवाह के विज्ञापन में यह भी लिख देते हैं कि लड़का या लड़की किसी भी जाति के हो सकते हैं।

✓9. **विवाह की आयु में परिवर्तन**–नगर में विवाह की आयु में काफी परिवर्तन हो गया है और इसका मुख्य कारण यह है कि लड़के व लड़कियाँ दोनों ही उच्च शिक्षा ग्रहण करने लगे हैं। दोनों ही विवाह के पूर्व नौकरी करना चाहते हैं। इस तरह लड़कियों के विवाह की आयु 20 वर्ष से 26 वर्ष तक हो गई है और लड़कों की आयु 26 व 30 वर्ष तक हो गई है।

✓10. **तलाक**–व्यक्तिवादी दृष्टिकोण वाले व्यक्ति प्रेम-विवाह करते हैं। वे केवल प्रेम-विवाह की भावुकता को ही सब कुछ समझ बैठते हैं। इसीलिए विवाह के बाद उनका जीवन कटु हो जाता है। यही नहीं पति-पत्नी अपने-अपने कार्यों पर अलग-अलग समय पर जाते हैं। इससे वे एक-दूसरे को पर्याप्त समय नहीं दे पाते। फलतः उनके बीच तनाव बढ़ता जाता है। तनाव बढ़ने के अनेक कारण हो सकते हैं। हो सकता है पति को पत्नी की नौकरी करना बुरा लगता हो या उसका घर से बाहर रहना उसे अखरता हो या स्वतन्त्र विचारों के कारण भी पत्नी बुरी लगती हो अथवा ऐसी पत्नी जो बहस करने में दक्ष हो आदि। ये सभी कारण तलाक की स्थिति को उत्पन्न करते हैं।

✓11. **धार्मिक जीवन का ह्रास**–परिवार एक ऐसा स्थान है, जहाँ माता-पिता बचपन से ही बच्चों को पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक की शिक्षा देना प्रारम्भ करते हैं।

औद्योगिक समाज में माता-पिता के पास इतना समय नहीं है कि वह अपने बच्चों को धार्मिक बातें सिखाएँ। व्यक्ति दिन-प्रतिदिन आधुनिक होता जा रहा है। रोज वह अनेक छोटी-बड़ी जातियों के साथ कार्य करता है। साथ में बैठकर चाय पीता है और साथ ही अपने श्रमिक आन्दोलनों में जेल भी जाता है। इस प्रकार व्यक्तियों के धर्म की अवधारणा ही परिवर्तित होती जा रही है। इसका प्रभाव हमारे परिवार पर भी पड़ रहा है। हम अपना दिन फिल्म के गानों से प्रारम्भ करते हैं। जबकि पहले प्रातः भजन, रामायण, गीता-पाठ आदि से प्रारम्भ होता था।

इसके अतिरिक्त आज व्यक्ति के पास इतना समय भी नहीं है कि, वह घण्टों पूजा-पाठ में लगाये। इसके साथ ही विज्ञान के प्रभाव ने व्यक्ति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण का बनाने में सहायता की है। इसलिए परिवार में धर्म का स्थान निरन्तर कम होता जा रहा है।

✓12. **यौन नैतिकता में परिवर्तन**–औद्योगिक नगरों में प्रायः पति और पत्नी दोनों ही नौकरी करते हैं। उन्हें पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है कि वे अपने बच्चों की भी देख-रेख कर सकें। फलतः माता-पिता का नियंत्रण बच्चों पर कम हो जाता है। अस्तु, लड़के एवं लड़कियाँ बन्धनहीन एवं स्वतन्त्र हो जाते हैं। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि यौन-सम्बन्धी अपराध बढ़ते जा रहे हैं।

✓सामाजिक जीवन पर प्रभाव
(Effect on Social Life)

औद्योगिक समाज का हमारे सामाजिक जीवन पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है। **वेबलन ने स्पष्ट कहा है कि, "व्यक्ति जैसा कार्य करता है वैसा ही अनुभव और विचार करता है।"**

मैकाइवर ने भी औद्योगिक कारकों के सामाजिक प्रभाव को दो भागों में बाँटा है–

1. **प्रत्यक्ष प्रभाव**–इसमें वह कहता है कि नये श्रम-संगठनों का निर्माण होता है तथा कार्यों

Scanned with CamScanner

में विशेषीकरण की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है। यह भी प्रयत्न किया जाता है कि निश्चित समय में ही काम समाप्त हो।

2. **अप्रत्यक्ष प्रभाव**–औद्योगिक उन्नति वाले नगर की जनसंख्या में उन्नति होती जा रही है। औद्योगिक नगरों में दूसरी समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं; जैसे, श्रमिक समस्याएँ, प्रतिस्पर्धा, बेकारी, अपराध आदि। अन्य सामाजिक प्रभाव निम्नलिखित हैं–

(1) **प्रकृति से दूरी**–औद्योगिक नगर गाँवों से सैकड़ों मील दूर बस रहे है। यहाँ प्रकृति कारखानों के धुओं, महलों, अट्टालिकाओं से घिर कर कैद हो गयी है। यहाँ व्यक्ति स्वच्छ वायु के स्थान पर धुआँ पाता है। इस धुएँ में ही वह जन्म लेकर धुएँ के सिराहने ही सो जाता है। यहाँ रात में लोक-गीतों की मधुर ध्वनि सुनने को नहीं मिलती, बल्कि कारखानों की गड़गड़ाहट सुनने को मिलती है। यहाँ सूरज, चाँद कब निकल कर डूब जाते हैं, असंख्य परिवारों को यह भी मालूम नहीं हो पाता है। नगर तो व्यक्ति के बनाये हुए हैं। इसलिए यहाँ सब कृत्रिम है। यह कृत्रिमता व्यक्ति के व्यवहारों में भी अपना स्थान बनाती जा रही है।

(2) **कृत्रिम व्यवहार एवं औपचारिकता**–नगर को जिस प्रकार कृत्रिम रूप से सुन्दर बनाया जाता है, उसी प्रकार व्यक्ति अपने व्यवहार को कृत्रिम गुणों से सजाता जा रहा है। इस कृत्रिम व्यवहार ने औपचारिकता का गुण भी अपने-आप में लपेट लिया है। उदाहरण के तौर पर रोज हमारे परिवार में अनेक लोग आते हैं। हम मुस्कराते हुए 'हैलो' करके हाथ मिलाते हैं, कुशल क्षेम पूछते हैं, फिर चाय की प्याली रखते हुए भी कहते हैं कि, कहिए कैसे आना हुआ ? यह व्यवहार एक नहीं अनेक के साथ करते हैं। ये नगर के केवल औपचारिक व्यवहार हैं, जो व्यक्ति प्रतिदिन जाने-आने वाले व्यक्ति से करता है। हम इस कृत्रिम व्यवहार के आदी हो गये हैं।

(3) **भौतिकवादी दृष्टिकोण का विकास**–नगर का व्यक्ति आध्यात्मिक चिन्तन से अलग होता जा रहा है। थोड़े में ही संतोष करने की उसकी प्रवृत्ति समाप्त होती जा रही है। हमारा लगाव धन-सम्पत्ति आदि से दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस लगाव ने व्यक्ति को व्यक्तिवादी बना दिया है। वह अपने ढंग से अमीर होता जा रहा है। जो बाहरी दिखावे के रूप में हमें प्रभावित करती है जैसे मकान, हवेली, कारें, आदि विलासिता की चीजें इन्हें हम प्राप्त करना चाहते हैं किसी भी तरह प्राप्त करना चाहते हैं।

(4) **मलिन बस्तियाँ**–नगरों में मजदूरों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और उनके अनुपात में मकान कम हैं। दूसरी तरफ श्रमिकों की इतनी आमदनी नहीं है कि अच्छे मकान ले सकें। नतीजा यह होता है कि एक छोटे, संकरे कमरे में अधिक-से-अधिक व्यक्ति रहते हैं, जिसमें जुआ, शराब उचित व अनुचित सभी प्रकार के कार्य करते हैं। इसका प्रभाव उनके बच्चों तथा अन्य व्यक्तियों पर पड़े बिना नहीं रहता।

(5) **नयी बीमारियों का जन्म**–नयी मशीनों की दुनिया में नये प्रकार के रोगों का भी जन्म हुआ है। मशीनों की आवाज ने व्यक्ति की स्नायु-शक्ति को दुर्बल बना दिया। इससे स्नायु से सम्बन्धित अनेक रोग उत्पन्न हुए। स्नायु दुर्बलता से न जाने कितने व्यक्ति पागल, विक्षिप्त होते जा रहे हैं। कितने ही व्यक्ति तो स्नायु-रोग से पीड़ित होकर आत्म-हत्या तक कर लेते हैं।

(6) **मनोरंजन का क्रय एवं विक्रय**–मनोरंजन नगरों में मुफ्त नहीं मिला करता। यहाँ गाँव की चौपाल उपलब्ध नहीं है, जहाँ झाँझ और मजीरों की धुन से व्यक्ति अपने सारे दिन की थकान भूल

Scanned with CamScanner

जाए। नगरों में मनोरंजन बेचा या खरीदा जाता है। व्यक्ति के पास पैसा हो तो, उसे सभी प्रकार के मनोरंजन भी उपलब्ध होगा, जैसे सिनेमा, क्लब, बड़े-बड़े होटलों में किसी प्रकार मनोरंजन शुल्क अदा करके ही खरीदा जा सकता है। यही नहीं, मनोरंजन का प्रबन्ध भी वही व्यक्ति कर सकता है, जिसके पास धन है। व्यक्ति मनोरंजन को बेचता है और इस प्रकार व्यापार के अनुसार उसे खरीदते हैं।

(7) जनसंख्या में स्त्री व पुरुष का अनुपात—औद्योगिक नगरों में पुरुष कार्य करने आते हैं और उनका परिवार गाँव में रहता है। इस प्रकार नगरों में पुरुषों की संख्या बढ़ती जा रही है। अपने परिवार को नगर में न लाने के एक नहीं अनेक कारण हैं। जैसे उसका वेतन कम है और साथ में नौकरी की अनिश्चितता भी है। श्रमिक के एकाकी जीवन को मिटाने में करने के लिए उसके परिवार का नगर में कोई नहीं होता है। फलतः वह बुरी आदतों में फँस जाता है जैसे जुआ, शराब, वेश्यावृत्ति आदि।

(8) जाति प्रथा का ह्रास—विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास के साथ विभिन्न जातियों को एक ही कारखाने, फैक्ट्री मिल आदि में एक-दूसरे के सम्पर्क में आईं। फलतः ब्राह्मण भी छोटी जाति के व्यक्तियों के साथ काम करता है। इससे छुआ-छूत की भावना समाप्त हो जाती है। उनका अपना संगठन है जिसके सदस्य सभी जाति के व्यक्ति हैं। वे एक ही साथ अपने अधिकारों की माँग करते हैं। इनकी बिरादरी श्रमिकों की बिरादरी है, जिसकी कोई जाति नहीं है। सभी जाति के बच्चे एक ही साथ खेलते हैं। एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। एक ही स्थान पर बैठते हैं। यह जाति-प्रथा के ह्रास के चिन्ह हैं—इन पर किसी भी जाति की पंचायत, मुखिया का नियन्त्रण नहीं होता है।

(9) सामुदायिक जीवन का पतन—हम (we) भावना में गाँव के सभी लोग सम्मिलित थे। किसी भी कार्यक्रम में सम्पूर्ण गाँव उत्साहपूर्वक भाग लेता था। जैसे मेले में जाएँगे तो झुण्ड में और देवी की पूजा को भी पूरा गाँव निकलेगा। ऐसे सभी कार्य सब मिलकर करते थे। किन्तु नगर की जिन्दगी ने हमारी खुशियों को चाय की प्याली तक सीमित रखा है या होटलों व सिनेमाघरों की कुर्सियों तक, जहाँ हम अकेले बैठे मनोरंजन करते हैं और पूजा भी समूह में नहीं, अकेले करते हैं, क्योंकि 'मैं' मेरी जिन्दगी का मालिक है, 'हम' नहीं।

(10) संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा—नगर की जिन्दगी इतनी खामोश और शान्ति की नहीं है जिसमें यहाँ कोई चीज आसानी से प्राप्त हो जाय। व्यक्ति को दो समय का भोजन प्राप्त करने में संघर्ष करना पड़ता है और प्रगति करने के लिए उसे प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजरना पड़ता है। दूसरों को मात देकर ही व्यक्ति आगे बढ़ सकता है। अपनी वस्तु को अधिक बेचने के लिए व्यक्तियों को अन्य-अनेक व्यापारियों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। यह यहाँ जीवन के हर क्षेत्र में है। चाहे वह व्यापार, नौकरी, पद की हो या कार्यों की। व्यक्ति इस संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा को जीतने के लिए उचित व अनुचित, नैतिक-अनैतिक सभी प्रकार के कार्यों को करता है।

(11) अपराध और बाल अपराधी—नगर की अनेक संस्थाओं व संगठनों ने अपराधियों को जन्म दिया है। यहाँ जिन्दगी के झगड़े, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, बेकारी, गन्दी बस्तियाँ आदि ऐसे कारण हैं, जो अपराध को प्रेरित करते हैं।

बाल अपराधियों की संख्या और भी गंभीर है। माता-पिता दोनों ही कार्य करते हैं। बच्चों को देखने-भालने वाला कोई नहीं है और न ही उन पर माता-पिता का नियन्त्रण ही रह गया है। उच्च एवं मध्यम परिवारों में इसीलिए बाल-अपराधी बढ़ रहे हैं और जो निम्न परिवारों और मलिन बस्तियों

में रहते हैं वह अपने परिवार, आस-पास, पड़ोस से तमाम बुरी आदतें सीखते हैं जो उन्हें बाल-अपराधी बनाती हैं।

(12) **शिक्षा की प्रगति**–नगरों की उन्नति के साथ शिक्षा में भी उन्नति एवं प्रगति हुई। वहाँ किताबी शिक्षा ही नहीं, बल्कि विभिन्न उद्योगों से सम्बन्धित शिक्षायें दी जाती हैं। अनेक प्रकार के इंजीनियरिंग, मेडिकल कालेज तथा छोटे उद्योगों के प्रशिक्षण के लिए अनेक विद्यालय भी खुल रहे हैं। इन सबका परिणाम यह हुआ कि व्यक्ति अधिक से अधिक बुद्धिजीवी होता जा रहा है और वह अपने परम्परात्मक कार्यों से अलग होता जा रहा है।

(13) **नये मूल्यों का जन्म**–औद्योगिक विकास ने एक नये समाज का निर्माण किया है, जिसमें पुराने मूल्य विघटित हो रहे हैं और नये मूल्य जन्म ले रहे हैं। आज वह व्यक्ति बड़ा है जो ऊँचे पद पर है–भले ही वह हरिजन परिवार का हो। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति का दृष्टिकोण नये मूल्यों के साथ बन रहा है और इसलिए आज धर्म, नैतिक, अनैतिक यह सब कुछ नये सन्दर्भों में हमारे समक्ष है। आज क्लब में व्यावसायिक स्त्री का नृत्य देखना बुरा नहीं समझा जाता, जब कि पहले घर के बड़े-बूढ़े इसे नैतिक पतन की संज्ञा दिया करते थे।

इसी तरह लड़के व लड़कियों के दोस्त अलग-अलग हैं। ये उनके साथ मुक्त होकर घूमते हैं। नवयुवकों में मदिरा का प्रचलन प्रगतिवादी दृष्टिकोण का प्रतीक है और वे माता-पिता जो अपने बच्चों के साथ बैठकर पीते हैं, वे परिवार प्रगतिशील कहलाते हैं। अन्तर्जातीय तथा प्रेम-विवाह करना आज फैशन हो गया है। ये सब हमारे परिवर्तित होते हुए मूल्यों के उदाहरण हैं।

आर्थिक जीवन पर प्रभाव (Effect on Economic life)

औद्योगीकरण पर नगरीकरण का प्रभाव हमारे आर्थिक जीवन पर भी काफी पड़ा है। जब व्यक्ति अपने देश के एक ग्रामीण क्षेत्र और एक प्रगतिशील क्षेत्र के व्यक्तियों को तुलनात्मक दृष्टि से देखता है तो सहज ही यह सोच नहीं पाता है कि यह एक ही देश के नागरिक हैं। औद्योगीकरण तथा नगरीकरण का आर्थिक जीवन पर अनेक प्रकार से प्रभाव पड़ा है। निम्नलिखित तथ्य इसके प्रमाण हैं–

(1) **पूँजीवाद की उत्कृष्ट भूमिका**–नगर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ सम्पत्ति की पूजा होती है। नगर का सबसे बड़ा देवता रुपया है। इसके अभाव में न तो बड़े-बड़े कारखाने खुल सकते हैं न श्रमिकों को ही मिल आदि में भर्ती किया जा सकता है। इस प्रकार औद्योगिक समाज में पूँजी का महत्त्व सबसे अधिक है। इसलिए यहाँ के मानवीय सम्बन्धों में भी सम्पत्ति का मुख्य स्थान है। व्यक्ति का आदर यहाँ सम्पत्ति की तराजू में तौलकर होता है। जो जितना धनी है, वह उतना ही सम्मान का पात्र है और उसे समाज में उतना ही अधिक ऊँचा स्थान दिया जाता है।

(2) **वर्गों की उत्पत्ति**–औद्योगिक समाज में एक वर्ग वह है जो व्यापार में पूँजी लगाता है अर्थात् मिल, फैक्टरी का मालिक और दूसरा वर्ग वह है जो अपना श्रम बेचकर अपनी जीविका अर्जित करता है अर्थात् श्रमिक वर्ग। ये दो मुख्य वर्ग पूँजीवादी व्यवस्था की देन है। वैसे नगरों में अन्य वर्ग भी पाये जाते हैं जैसे व्यापारिक वर्ग, अध्यापक वर्ग आदि। नगरों ने ही उच्च, मध्यम और निम्न वर्गों का जन्म दिया है।

(3) **व्यवसायों की विविधता एवं विशेषीकरण**–नगरों में प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक कार्य को नहीं कर सकता है। यहाँ प्रत्येक कार्य के लिए भिन्न प्रकार की मशीनें हैं। उन्हें वही व्यक्ति चला सकता है जिसने उन मशीनों को चलाने का प्रशिक्षण लिया हो। इस प्रकार व्यक्ति को कार्य करने के लिए एक

Scanned with CamScanner

ही प्रकार के कार्य में विशेष योग्यता प्राप्त करनी होती है। मशीनों ने जहाँ दस व्यक्तियों के कार्य को अकेले करने की क्षमता पैदा की वहाँ भिन्न प्रकार की मशीनों के लिये नये प्रकार की नौकरियाँ भी प्रदान की हैं।

(4) **बेकारी**–एक मशीन कई व्यक्तियों का कार्य करके अनेक व्यक्तियों को बेकार बनाती है। नगर के सभी कारखाने, मिल आदि वर्ष भर नहीं चलते वरन् वहाँ कुछ महीने ही कार्य होता है और बाकी महीने मिलें बन्द रहती हैं जिससे बहुत से व्यक्ति बेकार हो जाते हैं। नगरों में वैसे भी काम कम होता है और आबादी ज्यादा है। इसलिए यहाँ बेकारी की समस्या बनी रहती है।

(5) **कुटीर उद्योग-धन्धों का ह्रास**–औद्योगिक नगरों में कुटीर उद्योग धन्धों का पतन हो रहा है क्योंकि जो चीजें मशीनों से बनाई जाती हैं वे अधिक साफ-सुथरी और आकर्षक होती हैं और साथ ही सस्ती भी। कुटीर उद्योग-धन्धों से बनी हुई चीजें मंहगी होती है इससे वे कम बिकती हैं। इसका परिणाम छोटी जातियों के परिवार को भुगतना पड़ता है, क्योंकि यह कला उन्हीं के पास है जिससे वे अपनी जीविका अर्जित करते हैं।

(6) **श्रमिकों के झगड़े, संघर्ष एवं घिराव**–पूँजीवादी व्यवस्था में अधिक से अधिक श्रमिकों का शोषण होता है, किन्तु श्रमिक वर्ग में नई चेतना का संचार हो गया है। वह अपने अधिकारों एवं माँगों की पूर्ति के लिए आये दिन पूँजीपतियों से संघर्ष करते रहते हैं। यह संघर्ष पूँजीपतियों एवं श्रमिकों के बीच निरन्तर चलता रहता है।

(7) **जीवन के स्तरों में विभिन्नता**–दूर से यह बात देखने में भले ही लगे कि नगर में सभी रहने वालों का स्तर ऊँचा हो रहा है। वास्तविकता यह है कि यहाँ स्तरों में विभिन्नताएँ हैं। यहाँ गरीब और अमीर सभी रहते हैं। ऐसे व्यक्ति भी हैं जो जाड़े के दिनों में टाट ओढ़कर किसी पेड़ या झोपड़ी की छाया में रात काट देते हैं और सुबह फिर काम पर जाते हैं। ऐसे व्यक्ति भी है जो भीख माँगते हैं। होटलों में प्लेटें धोते है। ये लोग दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद दो बार की रोटी जुटाते हैं। हाँ उन लोगों के स्तरों में अवश्य उन्नति हुई है जिन्हें पढ़ने लिखने के साधन सुलभ हो गये हैं।

(8) **यातायात और संचार के साधनों में प्रगति**–किसी भी देश के उद्योग की प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि यातायात और संचार के साधन अच्छे हों। जैसे-जैसे उद्योगों का प्रचार होता जा रहा है, इस क्षेत्र में काफी प्रगति होती जा रही है। आज रेल, जहाज, हैलीकाप्टर, टेलीफोन, फैक्स, कोरियर सेवा इत्यादि इसकी प्रगति के प्रतीक हैं।

(9) **श्रम विभाजन**–औद्योगिक नगरों में श्रम-विभाजन एक सामान्य विशेषता है। अलग-अलग मशीनों को चलाने के लिए अलग तरह के लोग चाहिये। इस प्रकार श्रमिकों की योग्यता के अनुसार श्रम का विभाजन होता है।

औद्योगीकरकण तथा नगरीकरण के दुष्परिणामों को रोकने के उपाय
(Steps to Check evil effects of Industrialization and Urbanization)

औद्योगीकरण तथा नगरीकरण की प्रक्रिया में वृद्धि होने से समाज में अनेक प्रकार की समस्यायें निरन्तर उत्पन्न होती जा रही हैं। उन्हें कम करने के लिए निम्नलिखित कुछ उपाय दिए जा रहे हैं–

(1) **गाँवों के लिए कारखाने**–बड़े नगरों में अधिकतर कारखाने स्थापित किए जाते हैं उदाहरण के लिए कानपुर, अहमदाबाद, मुम्बई। इसका परिणाम यह होता है कि ग्रामीण व्यक्ति इन

Scanned with CamScanner